



Page No. : 571-578

शोध भूमि

शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका

बीकानेर संभाग के प्रयोगधर्मी कलाकार— योगेंद्र कुमार पुरोहित
सुरेन्द्र

शोधार्थी, ललित कला संकाय
वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान, भारत
Email Id : surendra26102016@gmail.com

डॉ. मनोज कुमार टेलर
निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर
विजुअल आर्ट विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है, कि योगेंद्र कुमार पुरोहित बीकानेर की समकालीन कला परंपरा के ऐसे महत्वपूर्ण कलाकार हैं, जिनकी कला में आत्मानुभूति, आत्मचिंतन, प्रतीकात्मकता, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक सरोकारों का समन्वित रूप दिखाई देता है। उनकी कला केवल दृश्य सौंदर्य की अभिव्यक्ति न होकर उनके व्यक्तिगत अनुभवों, संघर्षों, संवेदनाओं और जीवन-दृष्टि का सशक्त माध्यम है। उनकी रचनाओं में पारंपरिक राजस्थानी लोक-संस्कृति, लोकजीवन, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक प्रतीकों तथा आधुनिक जीवन-बोध का सार्थक समन्वय दिखाई देता है। उनकी आत्मचित्रण-शृंखला विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके लिए आत्मचित्र केवल चेहरे अथवा व्यक्तित्व का दृश्य अंकन नहीं, बल्कि 'स्व' की खोज और अंतर्मन की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

समूह प्रदर्शनियों और विभिन्न कला आयोजनों के माध्यम से उनकी कला-चेतना ने व्यापक स्तर पर अपनी पहचान बनाई। अतः कहा जा सकता है कि उनकी कला परंपरा और आधुनिकता, व्यक्तिगत अनुभव और सामाजिक चेतना तथा दृश्य अभिव्यक्ति और आत्म-अन्वेषण के बीच एक सेतु का कार्य करती है। उनकी निरंतर सृजनशीलता, प्रयोगधर्मिता और आत्मचिंतनशील दृष्टि उन्हें बीकानेर संभाग के समकालीन कला परिदृश्य में एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण कलाकार के रूप में स्थापित करती है।

बीज शब्द : सृजनशीलता, प्रयोगधर्मिता और आत्मचिंतनशील, बीकानेर संभाग, समकालीन कला परिदृश्य।

योगेंद्र कुमार पुरोहित समकालीन भारतीय कला-जगत के ऐसे सृजनशील कलाकार हैं जिनकी कला-दृष्टि में आत्मानुभूति, प्रतीकात्मकता और अभिव्यंजनात्मकता का सशक्त समन्वय दिखाई देता है। वे चित्रकार होने के साथ-साथ फोटोग्राफर और कला-समीक्षक भी हैं। उनकी मान्यता है कि

वह सृजन-कर्म जो व्यक्ति को स्वतंत्र अनुभूतियों के साथ जीने का स्वच्छ और निर्मल वातावरण प्रदान करे, वही सच्चे अर्थों में कला है।

अंतरराष्ट्रीय कला-जगत में भी उनके कार्य की सराहना हुई है। अर्जेटीना की लिलियाना ने उनके चित्रों के संदर्भ में कहा कि योगेंद्र के चित्रों में दर्द बोलता है और उनकी अभिव्यक्ति की कुंजी चुनौतीपूर्ण तथा सशक्त प्रतीत होती है। वहीं अमेरिका (न्यू जर्सी) के रिचर्ड कुशीनके ने उनकी कला-यात्रा की तुलना पाब्लो पिकासो के संघर्षपूर्ण आरंभिक दिनों से करते हुए उनके सृजन में दृढ़ता और आत्मनिष्ठा को रेखांकित किया।

बीकानेर साहित्य, कला और संस्कृति का त्रिवेणी संगम है। यहाँ की राजस्थानी भाषा, लोक-साहित्य, वेशभूषा, खान-पान और बोलियों में गहरी सांस्कृतिक चेतना परिलक्षित होती है। बीकानेर की वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला के साथ-साथ परंपरागत उस्ता कला (सुनहरी कलम) और मथेरण शैली यहाँ की अनूठी और विशिष्ट पहचान रही हैं।

समकालीन कला में भी बीकानेर का योगदान उल्लेखनीय है। यहाँ यथार्थवादी शैली से लेकर उत्तर-आधुनिक (पोस्ट मॉडर्न) अभिव्यक्ति तक विविध प्रयोग हुए हैं। परंपरा और आधुनिकता का यह समन्वय योगेंद्र कुमार पुरोहित जैसे कलाकारों की कला-दृष्टि में स्पष्ट दिखाई देता है।

योगेंद्र कुमार पुरोहित अपने आंतरिक मनोभावों को कैनवास, कागज या मिट्टी के पात्र पर उकेरते हैं। वे कला को आत्मानुभूति की शांति से जोड़ते हैं। उनके अनुसार सृजन एक दैनिक साधना है—एक ऐसी यात्रा जो निरंतर चलती रहती है। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध श्रृंखला आत्मचित्रण (कला यात्रा) के माध्यम से इसी विचार को मूर्त रूप दिया है। वर्ष 2008 में जवाहर कला केंद्र, जयपुर के ग्राफिक स्टूडियो में कला-अभ्यास के दौरान इस श्रृंखला का आरंभ हुआ।



वर्ष 2025 तक वे लगभग 5000 से अधिक आत्मचित्रों का सृजन कर चुके हैं। यह एक ही अवधारणा पर आधारित दीर्घकालिक और अनुशासित सृजन-प्रक्रिया का अद्वितीय उदाहरण है।

वे स्वयं लिखते हैं— मुझे प्रत्येक दिन सृजन करना पसंद है, और यही मेरी कला-यात्रा है। उनकी कला को प्रतीकवाद और अभिव्यंजनावेद की दृष्टि से समझा जा सकता है। वे रंगों, रेखाओं और टेक्सचर के माध्यम से अपने अंतर्मन के विचारों, संघर्षों और भावनाओं को प्रतीकों में रूपांतरित करते हैं।

उनकी कला में उपयोग किए गए प्रतीक गहरे और बहुआयामी अर्थ रखते हैं, जो दर्शक को जीवन, मनोभाव और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ते हैं। पहाड़ संघर्ष का प्रतीक हैं चित्र में विभिन्न बनावट(टेक्सचर) में उकेरे गए पहाड़ जीवन की जटिलताओं और चुनौतियों को दर्शाते हैं।

मछलियाँ विचारों की स्वतंत्र और निरंतर गति का संकेत देती हैं, जैसे समुद्र की मछलियाँ अनिश्चित मार्ग पर तैरती हैं, वैसे ही मानव विचार भी गतिशील और अविचल यात्रा पर रहते हैं। विद्युत खंभा स्वयं कलाकार का प्रतिनिधित्व करता है, जिस पर दो तार जुड़े हैं—एक सामाजिक जिम्मेदारी का, दूसरा सृजनात्मक दायित्व का—यह जीवन के द्वंद्व और जिम्मेदारियों को रेखांकित करता है।

हवाई जहाज विचार-यात्रा और भौतिक यात्रा के बीच के अंतर को दिखाता है। कलाकार के अनुसार, वास्तविक यात्रा शरीर की नहीं, बल्कि मन और विचार की होनी चाहिए। बादल संभावनाओं और खुशहाली के संकेतक हैं बरसते हैं तो समृद्धि, अन्यथा अकाल। काला हाथी कलाकार का प्रतीकात्मक रूप है, जिसमें सूंड में भाला स्वायत्तता का प्रतीक और पीठ पर छतरी सांस्कृतिक मूल्यों की सुरक्षा का प्रतीक है। माइलस्टोन या मील का पत्थर यात्रा का प्रतीक है, जिस पर अंकित दिल दर्शाता है कि यह यात्रा प्रेम और शांति की ओर निर्देशित है, केवल दूरी नापने के लिए नहीं। पताका भारतीय सांस्कृतिक तत्वों का प्रतिनिधित्व करती है, और विविध टेक्सचर समय के बदलते आयामों का संकेत देते हैं।

उनका कथन—"Through myself you can catch to yourself" यह दर्शाता है कि वे अपनी कला को आत्म-खोज और आत्म-अनुभव का माध्यम मानते हैं। उनका मानना है कि कलाकार के माध्यम से दर्शक अपने भीतर की खोज कर सकता है और स्वयं तक पहुँच सकता है। इस प्रकार उनके प्रतीक न केवल दृश्य सौंदर्य प्रदान करते हैं, बल्कि गहन दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक अर्थ भी व्यक्त करते हैं।

योगेंद्र कुमार पुरोहित की कला में मरुभूमि का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। जिस प्रकार रेगिस्तान का किसान तपते सूरज और बंजर भूमि के बीच भी अपने श्रम से हरियाली संभव करता है, उसी प्रकार कलाकार भी बाधाओं के बीच अपनी जड़ों से जुड़कर सृजन करता है। वे मानते हैं कि कलाकार को अपनी भूमि, संस्कृति और अनुभवों से जुड़ा रहना चाहिए। उनकी कला में आत्म-संघर्ष, सामाजिक दायित्व और सांस्कृतिक चेतना का त्रिकोण उपस्थित है। वे अपनी सृजन-प्रक्रिया को प्रेम और शांति की यात्रा मानते हैं और इसे समस्त कलाओं का अंतिम उद्देश्य भी बताते हैं।

योगेंद्र कुमार पुरोहित का जन्म 27 अक्टूबर 1976 को राजस्थान के बीकानेर शहर में एक शिक्षित एवं संपन्न परिवार में हुआ। उनके पिता श्री विजय शंकर पुरोहित विद्युत विभाग में सेवारत थे और उनकी माता शिक्षा विभाग में कार्यरत थीं। वर्तमान समय में दोनों सेवानिवृत्त हो चुके हैं। परिवार का वातावरण शिक्षित, संस्कारयुक्त और अनुशासित था, जिसने उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामाजिक और आर्थिक रूप से स्थिर परिवेश मिलने के कारण उन्हें बचपन में किसी प्रकार की अभावजन्य कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा। परिणामस्वरूप उनकी शिक्षा-दीक्षा सुव्यवस्थित ढंग से श्रेष्ठ विद्यालयों में संपन्न हुई। बचपन से ही वे मृदुभाषी, नैतिक मूल्यों से युक्त और कर्तव्यनिष्ठ विद्यार्थी रहे। गुरुजनों एवं बड़ों के प्रति सम्मान का भाव आज भी उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता है।

कला के प्रति उनकी रुचि प्रारंभ से ही स्पष्ट दिखाई देती है। जब वे कक्षा तीन में अध्ययनरत थे, तब एक अध्यापक ने विद्यार्थियों को पेड़ का चित्र बनाने को कहा। योगेंद्र ने कुछ ही मिनटों में सजीव पेड़ का चित्र बनाकर प्रस्तुत कर दिया। शिक्षक ने उनकी प्रतिभा की सराहना की और उन्हें कला में आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया। विद्यालय कालीन पाठ्यक्रम में कला विषय अनिवार्य तो था, किंतु कला शिक्षक उपलब्ध नहीं थे। फिर भी वे अपनी रचनात्मकता को रोक नहीं पाए। वे रफ कॉपी में क्रिकेट, फुटबॉल और वॉलीबॉल खेलते हुए खिलाड़ियों के चित्र बनाते रहते। पेस्टल और पेंसिल रंगों का प्रयोग उन्हें विशेष रूप से प्रिय था।

कक्षा तीन में समाजोपयोगी कार्य के अंतर्गत उन्होंने कार्डबोर्ड और कागज से एक छत-पंखा बनाकर विद्यालय में प्रस्तुत किया। वह पंखा इतना यथार्थ प्रतीत होता था कि विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने उसे कक्षा की छत में लगे हुक पर टंगवा दिया। एक बार जिला शिक्षा अधिकारी विद्यालय निरीक्षण के लिए आए। उस समय विद्यालय की विद्युत आपूर्ति बंद थी। अधिकारी ने पंखा देखकर उसे चलाने का निर्देश दिया, परंतु स्विच ऑन करने पर भी पंखा नहीं चला। तब प्रधानाध्यापक ने बताया कि यह वास्तविक नहीं, बल्कि एक विद्यार्थी का क्राफ्ट-कार्य है। जब अधिकारी को ज्ञात हुआ कि यह कृति योगेंद्र की है, तो उन्होंने उनकी प्रशंसा की और पीठ थपथपाई। यह घटना उनके जीवन का पहला सार्वजनिक सम्मान था, जिसने उनकी कला-यात्रा को प्रेरणा दी।

कक्षा नवमी में एक बार गणित की कक्षा के दौरान वे स्केचबुक में चित्र बना रहे थे। गणित शिक्षक ने इसे अनुशासनहीनता समझकर उन्हें दंडित किया। यद्यपि यह घटना पीड़ादायक थी, किंतु इसने उनकी कला-अभिरुचि को और सुदृढ़ बना दिया। उनके माता-पिता ने सदैव उन्हें कला में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। यही निरंतर प्रोत्साहन उनके सृजन-पथ का आधार बना।

योगेंद्र कुमार पुरोहित की प्रारंभिक शिक्षा बीकानेर में हुई। उन्होंने राजकीय प्राथमिक विद्यालय, साले की होली चौक से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् बी. के. स्कूल से माध्यमिक शिक्षा पूर्ण की। यहीं उनका परिचय कला शिक्षक भूरमल सोनी से हुआ। प्रथम दिवस पर सोनी जी ने विद्यार्थियों को केले का चित्र बनाने को कहा। योगेंद्र ने अपनी सृजनात्मकता का परिचय देते हुए चित्र बनाया, जिससे प्रभावित होकर शिक्षक ने उन्हें पुरस्कृत किया।

हायर सेकेंडरी शिक्षा उन्होंने मोहता मूलचंद दमाणी सीनियर हायर सेकेंडरी स्कूल में 1992-1994 के दौरान फाइन आर्ट विषय में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। वर्ष 1994 में उन्होंने चार वर्षीय बी.एफ. ए. (पेंटिंग) पाठ्यक्रम हेतु राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर में प्रवेश लिया। इस निर्णय के लिए उनके कला शिक्षक श्री विनोद आचार्य और उनके मित्र स्वर्गीय लीलाधर सुथार ने उन्हें प्रेरित

किया। वर्ष 2000 में उन्होंने Sir J. J. School of Art, मुंबई में मास्टर ऑफ फाइन आर्ट के लिए आवेदन किया। किंतु उस समय बी.एफ.ए. अंतिम वर्ष के परिणाम न आने से साक्षात्कार में विलंब हुआ।

पंद्रह दिनों तक प्रतीक्षा करने के बाद वे बीकानेर लौट आए। दुर्भाग्यवश उसी दिन उन्हें साक्षात्कार हेतु टेलीग्राम प्राप्त हुआ, किंतु वर्षा और रेल-सेवा में विलंब के कारण वे समय पर मुंबई नहीं पहुँच पाए। इस प्रकार उनका प्रवेश संभव न हो सका। उस समय राजस्थान में भी एम.एफ.ए. पाठ्यक्रम आरंभ नहीं हुआ था, जो उनके लिए एक और नई बाधा बनी। एम.एफ.ए. प्रारंभ होने से पूर्व तीन वर्षों तक उन्होंने स्वतंत्र चित्रकार के रूप में कार्य किया। उन्होंने जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर, कोटा और बीकानेर सहित दिल्ली एवं मुंबई में एकल और सामूहिक प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं। ललित कला अकादमी, नई दिल्ली में आयोजित मंथन ग्रुप की प्रदर्शनी में भी उनकी सहभागिता रही।

वर्ष 2003 में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट कॉलेज, जयपुर में एम.एफ.ए. पाठ्यक्रम आरंभ हुआ। योगेंद्र कुमार पुरोहित इस पाठ्यक्रम के प्रथम बैच के प्रथम विद्यार्थी बने।

वर्ष 2005 में यह पाठ्यक्रम पूर्ण हुआ और उन्हें सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी का पुरस्कार प्रदान किया गया। एम.एफ.ए. के दौरान उन्हें ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित न्यू मीडिया वर्कशॉप में भाग लेने का अवसर मिला। वहाँ उनकी प्रतिभा और अभिव्यक्ति से प्रभावित होकर प्रशिक्षक मास्टर नीतीश भारद्वाज ने उनसे पूछा कि वह विद्यार्थी हैं या स्वयं एक दक्ष शिक्षक। यह उनके कौशल और आत्मविश्वास का प्रमाण था।

योगेंद्र कुमार पुरोहित ने कला के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बहुविध माध्यमों और निरंतर प्रयोगशीलता के आधार पर निर्मित की है। उन्होंने फाइबर कास्टिंग, क्ले मॉडलिंग, वुडकट, लिथोग्राफी, इचिंग, ऑफसेट, डिजिटल फोटोग्राफी, इंस्टॉलेशन (प्रतिस्थापन कला), तेल चित्रण, टेंपरा, पेंसिल रंग, जलरंग, पेस्टल, एक्रेलिक तथा इंक जैसे विविध माध्यमों में कार्य किया है। इन सभी माध्यमों के माध्यम से उन्होंने अपने रचनात्मक व्यक्तित्व को निखारा और उसे नए विस्तृत आयाम प्रदान किए।

उनकी चित्र-शैली की एक प्रमुख विशेषता नीले रंग का व्यापक प्रयोग है। उन्होंने लंबे समय तक एकवर्णीय (मोनोक्रोम) रंग-योजना में नीले रंग के विविध शेड्स का उपयोग करते हुए कार्य किया। यह रंग उनके लिए केवल दृश्य प्रभाव का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मिक गहराई और चिंतनशीलता का प्रतीक भी है।

भारतीय संस्कृति, लोकपरंपरा और राष्ट्रीय पृष्ठभूमि के प्रति जिज्ञासा उनके कला-संसार का अभिन्न अंग है। वे अपने चित्रों के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों, ऐतिहासिक व्यक्तित्वों और लोकजीवन के विविध पक्षों को अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

प्रारंभिक चरण में उन्होंने व्यक्तिचित्र, प्रकृति-चित्रण और लोक-रंग से संबंधित रचनाएँ कीं। उनके व्यक्तिचित्रों में अमिताभ बच्चन, महाराजा गंगा सिंह तथा महाराजा करणी सिंह जैसे प्रमुख व्यक्तित्वों का चित्रण उल्लेखनीय है। प्रकृति-चित्रण में उन्होंने पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, नायक-नायिका तथा होली-दीपावली जैसे उत्सवों को विषय बनाया। तेल रंगों में उन्होंने

कारगिल युद्ध, माय सेल्फ, वे ऑफ डेथ तथा लाइफ सीरीज जैसी अवधारणात्मक श्रृंखलाएँ भी निर्मित की। बीकानेर की पारंपरिक हवेलियों और वास्तुकला का चित्रण उनके कार्य का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

नाट्य-कला के लिए उन्होंने फाइबर कास्टिंग तकनीक द्वारा ढाल, भाले, तीर, तलवार आदि प्रॉपर्टी का निर्माण भी किया। उनके चित्रों की वर्ण-योजना में चमकीले और शांत रंगों का संतुलित प्रयोग दिखाई देता है। रेखाओं में स्पष्ट गतिशीलता और संरचना में त्रि-आयामी आभास, द्वि-आयामी पटल पर प्रभावशाली रूप में उभरता है।

उनकी कला का केंद्रीय तत्व अंतर्मन की यात्रा है। वे अपने चित्रों में प्रतीकात्मक और सांकेतिक रूपों के माध्यम से आत्मचिंतन को व्यक्त करते हैं। उनकी दीर्घकालिक श्रृंखला आत्म-चित्रण या माय सेल्फ पिछले लगभग पंद्रह वर्षों से निरंतर जारी है, जिसमें वे 5000 से अधिक चित्र रच चुके हैं।

यह सृजन-प्रक्रिया सीमित माध्यमों जैसे कागज, पेंसिल, इंक और रंग में सम्पन्न होती है। उनके अनुसार मन ही सृजन का प्रथम पथ है, और मन की गहराइयों में उतरने से तत्व-ज्ञान की प्राप्ति संभव होती है। वे एकाग्र ध्यान और निरंतर अभ्यास को ज्ञान-प्राप्ति का माध्यम मानते हैं। कला के माध्यम से उन्होंने प्रेम और शांति के तत्व को आत्मसात किया है। उनके लिए कला केवल दृश्य अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि आत्म-साधना और आंतरिक संतुलन का मार्ग है।

योगेंद्र कुमार पुरोहित ने अपनी चित्र-तकनीक को सरल और सुलभ बनाया है। वे प्रायः 12×15 इंच आकार के कागज पर चित्र बनाते हैं। उनकी प्रक्रिया में पहले इंक पेन से रेखांकन किया जाता है, तत्पश्चात् जलरंग या एक्रेलिक से रंगांकन किया जाता है।

उन्होंने कोलाज शैली में भी दीर्घकाल तक कार्य किया तथा केवल पेंसिल के माध्यम से भी अनेक चित्र रचे। वे स्वयं कहते हैं कि वे किसी एक माध्यम में बंधे नहीं हैं। उनके लिए विषय-वस्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण है शैली और तकनीक विषय की मांग के अनुसार स्वतः निर्धारित होती है।

योगेंद्र कुमार पुरोहित ने अनेक पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं के मुखपृष्ठ तैयार किए हैं। इनमें राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति से संबंधित प्रकाशन प्रमुख हैं। उन्होंने विभिन्न साहित्यिक कृतियों, शैक्षिक पुस्तकों तथा कला-समीक्षात्मक ग्रंथों के आवरण-चित्रों का निर्माण किया।

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी की पत्रिका "जागती जोत" के लिए भी उन्होंने आवरण-चित्र तैयार किए। इसके अतिरिक्त शैक्षिक विभाग की पुस्तकों और अंतरराष्ट्रीय कला-पत्रिकाओं के लिए भी उन्होंने रचनात्मक आवरण-डिजाइन प्रस्तुत किए।

योगेंद्र कुमार पुरोहित वर्ष 2001 से राजस्थान सरकार के पंजीकृत हस्तशिल्पी हैं। वर्तमान में उन्हें भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) विभाग द्वारा राष्ट्रीय हस्तशिल्पी एवं डिजाइनर के रूप में चयनित किया गया है।

पेपर क्राफ्ट में उन्होंने अखबार और धागे का उपयोग कर अनेक शिल्प-रचनाएँ तैयार कीं। इनमें ऊँट, चप्पल, हवाई जहाज, जलयान, साइकिल, बल्ला-बॉल, घंटी, लैंप, दूध की टंकी, सारस, बैल का सिर, बल्ब, बैडमिंटन रैकेट, कोयल, हाथी, ढोलक, यहाँ तक कि छह फीट लंबा दूधब्रश और

पेस्ट ट्यूब जैसे शिल्प शामिल हैं। इन शिल्पों में पुनर्चक्रण (रिसाइक्लिंग) और सृजनात्मकता का अद्भुत संयोजन दिखाई देता है।

सन 1999 में योगेंद्र कुमार पुरोहित ने समकालीन कला के सशक्त वातावरण के निर्माण हेतु “मंथन ग्रुप” की स्थापना की। इसका उद्देश्य राजस्थान में आधुनिक एवं प्रयोगशील कला को मंच प्रदान करना था। इस ग्रुप के संस्थापक सदस्यों में योगेंद्र कुमार पुरोहित, संजय वर्मा, सोहन जाखड़, अपूर्व शर्मा, आराधना पांडे और पूर्णिमा कोठारी शामिल थे। ये सभी राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट के पेंटिंग विभाग के वरिष्ठ एवं कनिष्ठ साथी रहे। मंथन ग्रुप की प्रथम समूह प्रदर्शनी 1999 में जवाहर कला केंद्र (चतुर्दिग कला दीर्घा), जयपुर में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में 6 कलाकारों के लगभग 100 चित्र प्रदर्शित किए गए। यह योगेंद्र कुमार पुरोहित के विद्यार्थी जीवन की पहली और सबसे महत्वपूर्ण समूह प्रदर्शनी थी।

प्रदर्शनी का उद्घाटन पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत तथा वरिष्ठ पारंपरिक चित्रकार देवकीनंदन शर्मा द्वारा किया गया। यह प्रदर्शनी एक सप्ताह तक चली और कला-जगत में सराही गई। मंथन ग्रुप ने राजस्थान के साथ-साथ मुंबई और नई दिल्ली जैसे महानगरों में भी अपनी कला की प्रदर्शनियां लगाईं। उनके प्रमुख आयोजन में नई दिल्ली के Lalit Kala Akademi (Ravindra Bhavan), मुंबई के खार स्थित प्रदर्शक कला दीर्घा और सन्मुखानंद हॉल की आर्ट लैंड कला दीर्घा शामिल हैं। सन 2001 और 2004 में मुंबई में दो बड़ी समूह प्रदर्शनियां आयोजित की गईं, और 1999 से 2007 तक यह ग्रुप सक्रिय रूप से कला गतिविधियों में संलग्न रहा।

योगेंद्र कुमार पुरोहित ने बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत को केंद्र में रखकर उल्लेखनीय इंस्टॉलेशन प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने पूर्वजों की हवेली को अखबार के बड़े पदों से ढककर संदेश दिया कि शहर की अब केवल 999 हवेलियां ही बची हैं। यह कार्य विशेष रूप से विरासत संरक्षण के प्रति समाज में इसके महत्व पर ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से किया गया था।

पुरोहित ने इंस्टॉलेशन कला के माध्यम से कला और सामाजिक संदेश को विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुत किया। इनमें Jawahar Kala Kendra (2006), जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर (2006), रवींद्र भवन, दिल्ली (2007), बीकानेर (2007), ग्रामीण स्थल, बीकानेर पर विरासत अवधारणा (2008) और टाउन हॉल, बीकानेर शामिल हैं। टाउन हॉल में उन्होंने नाट्य कला के तत्वों के साथ कला का अंतर-संबंध स्थापित किया। इन प्रस्तुतियों में कला और समाज के बीच संबंध को स्पष्ट और प्रभावशाली रूप में प्रदर्शित किया गया, जिससे दर्शकों में सांस्कृतिक जागरूकता और विरासत संरक्षण की संवेदना विकसित हुई।

सन 2003 में बीकानेर के बांग्ला नगर क्षेत्र में योगेंद्र आर्ट एंड डिजाइनिंग स्टूडियो की स्थापना की गई। इसका उद्घाटन वरिष्ठ चित्रकार श्रीमती किरण सोनी गुप्ता (सीएडी कमिशनर, बीकानेर) द्वारा किया गया। कोविड काल में जवाहर कला केंद्र द्वारा आयोजित ऑनलाइन वर्कशॉप में उन्होंने सक्रिय सहभागिता निभाई और मानदेय के रूप में 2000 ₹ प्राप्त किए। कला शिक्षा के दौरान ही उन्होंने स्वयं का कैमरा खरीदा और स्टिल कैमरे से लेकर डिजिटल कैमरे तक दक्षता प्राप्त की। उन्होंने जयपुर के समाचार पत्र सिटी भास्कर के साथ प्रेस फोटोग्राफर के रूप में कार्य किया और उसे जयपुर का प्रथम रंगीन अखबार बनाने में योगदान दिया।

उनकी फोटोग्राफी में प्रकृति, किले, हवेलियाँ, महल और मंदिर प्रमुख विषय रहे हैं। ओसियां जैन मंदिर की खंडित मूर्तियों पर आधारित उनकी पहली फोटो प्रदर्शनी बीकानेर की सुदर्शन कला दीर्घा में आयोजित हुई, जिसमें 32 फोटोग्राफ प्रदर्शित किए गए। यह प्रदर्शनी एक सप्ताह तक चली।

1999 में बी.एफ.ए. पूर्ण कर बीकानेर लौटने के बाद उन्होंने महारानी सुदर्शन कला दीर्घा, बीकानेर में अपनी प्रथम एकल प्रदर्शनी आयोजित की। यह प्रदर्शनी समकालीन और प्रयोगात्मक शैली की थी।

प्रारंभ में स्थानीय दर्शकों ने इन चित्रों को समझ से परे बताकर आलोचना की, परंतु वरिष्ठ साहित्यकार भवानी शंकर व्यास ने उनके कार्य की गहराई को पहचाना और उन्होंने प्रत्येक चित्र का सूक्ष्म अवलोकन कर कलाकार को प्रोत्साहित किया और कला-साहित्य के अंतरु संबंध को स्पष्ट किया। व्यास जी उनके संरक्षक, समीक्षक और प्रेरणास्रोत बने। उनके मार्गदर्शन में योगेंद्र ने कला-लेखन और सेमिनार प्रस्तुतियों में भी सक्रिय भाग लिया।

2003 में ऑल इंडिया फाइन आर्ट एंड क्राफ्ट सोसाइटी, नई दिल्ली के राष्ट्रीय कला शिविर कला कुंभ में सहभागिता उनके लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।

2007 में मुंबई और दिल्ली में आयोजित एकल प्रदर्शनियों की प्रेरणा भी भवानी शंकर व्यास जी से मिली। महानगरों में सफलता के बाद जब वे बीकानेर लौटे, तो व्यास जी ने उन्हें राष्ट्रीय कलाकार कहकर पुकारा किया।

2008 में तुर्की की कला पत्रिका बेंट आर्ट मैगजीन के मुख्य एवं अंतिम आवरण पृष्ठ पर उनके चित्र प्रकाशित हुए। साथ ही माय सेल्फ श्रृंखला पर लेख भी प्रकाशित हुआ। इस अवसर पर उन्हें अंतरराष्ट्रीय कलाकार के रूप में संबोधित किया गया।

योगेंद्र कुमार पुरोहित की कृतियाँ भारत एवं विदेशों के निजी और सरकारी संग्रहालयों में संग्रहीत हैं। इटली, जर्मनी, तुर्की, लंदन, फ्रांस, अमेरिका, ग्रीस सहित भारत के दिल्ली, चेन्नई, मुंबई, बीकानेर, जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर, कोटा, बांसवाड़ा आदि शहरों में उनके चित्र संग्रहित हैं।

योगेंद्र कुमार पुरोहित की कला-यात्रा संघर्ष, प्रयोगशीलता और सांस्कृतिक प्रतिबद्धता का समन्वित उदाहरण है। मंथन गुप से लेकर राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनीयों तक, इंस्टॉलेशन से फोटोग्राफी तक, और आत्म-चित्रण से विरासत संरक्षण तक उनकी सृजनात्मकता निरंतर विकसित होती रही है।

वे केवल चित्रकार ही नहीं, बल्कि एक चिंतक, प्रयोगवादी कलाकार और सांस्कृतिक संरक्षक के रूप में स्थापित हैं।

संदर्भ सूची

1. स्वयं के व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर..
2. पत्रिका मारु नवकिरण अंक जुलाई सितंबर 2023 के पृष्ठ संख्या 53, 54 पर प्रकाशित.
3. मैगजीन विकल्प अंक मई 2010 के पृष्ठ संख्या 29,30 पर प्रकाशित